ओमशांति

रिकार्ड– तुम्हीं हो माता..... प्रातःक्लास 3–7–67

बच्चों ने अपने बाप की महिमा सुनी। महिमा भी एक की ही है। और कोई की महिमा गाई नहीं जा सकती। जबकि ब्र.वि.शं. की कोई महिमा नहीं है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना करवाते हैं। शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। तो महिमा फिर भी शिवबाबा की ही है। ब्रह्मा वा शंकर की कोई महिमा नहीं है। ऐसे नहीं कहते हो कि शंकर विनाश करते हैं। नहीं। शंकर द्वारा परमपिता परमात्मा विनाश कराते हैं। विष्णु द्वारा पालना कराते हैं। इन ल.ना. को इतना लायक भी शिवबाबा ही बनाते हैं। उनकी ही महिमा है। उनके सिवा फिर किनकी महिमा गाई जावे?उनको ऐसा बनाने वाला टीचर नहीं हो तो वो भी ऐसा नहीं बने। फिर महिमा है सूर्यवंशी घराने की। जो ही राज्य करते हैं। बाप संगम पर नहीं आवे तो उनको राजाई भी नहीं मिले। फिर होता है रावण का राज्य। उनकी महिमा नहीं है। ल.ना. की महिमा भले गाते हैं, सिर झुकाते हैं ;परंतु जानते कुछ भी नहीं हैं। वास्तव में तो महिमा कोई की भी नहीं हैं। विकारी राजाओं की महिमा तो है नहीं। महिमा है ही सिर्फ एक की दूसरा नहीं कोई। ऊँच ते ऊँच शिवबाबा ही है। शिवबाबा ही से ऊँच ते ऊँच पद मिलता है तो उनको फिर अच्छी तरह से याद करना चाहिए ना। अपने को राजा बनाने लिए आप ही पढ़ना है। जैसे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो अपने को बैरिस्टर बनाते हैं ना। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे वो ही ऊँच पद पावेंगे। ना पढ़ने वाले ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। पढ़ने लिए श्रीमत मिलती है। मूल बात है पावन बनने की। जिसके लिए यह पढ़ाई है। इस (समय) सभी मनुष्य तमोप्रधान भ्रष्टाचारी हैं। पतित हैं। पतित दुनियां में पतित ही रहते हैं। अच्छे वा बुरे मनुष्य तो होते ही हैं ना। पवित्र रहने वाले को अच्छा कहा जाता है। अच्छा पढ़कर बड़ा आदमी बनते हैं तो महिमा होती है ना ;परंतु हैं तो सभी पतित। पतित ही पतित की महिमा करते हैं। सतयुग में हैं पावन। वहां कोई किसी की महिमा नहीं करते हैं। यहां तो पवित्र सन्यासी भी हैं तो अपवित्र गृहस्थी भी हैं। तो पवित्र की महिमा गाई जाती है। वहां तो यथा राजा–रानी तथा प्रजा होते हैं। और कोई धर्म ही नहीं जिसके लिए पवित्र–अपवित्र कहें। यहां तो कोई गृहस्थियों की भी महिमा गाते हैं। मुसलमानों के जाकर शिष्य बनते हैं। उनके लिए तो वो जैसे कि खुदा है ;क्योंकि अल्लाह हूँ2 करते रहते हैं और उनको जाकर भाकी पहनते हैं। अल्लाह हूँ2 फिर तो सभी अल्लाह हो जाते हैं। अल्लाह को तो पतित–पावन ,लिबरेटर गाइड कहा जाता है। वो फिर हर एक कैसे हो सकते हैं?दुनियां में कितना घोर अंधेरा है। अभी तुम बच्चे यह सब समझते हो। तुम बच्चों को अब यह ओना होना चाहिए। हमको तो पढ़कर अपने को राजा बनाना है। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करेंगे वो ही राजतिलक पावेंगे। बच्चों को हुल्लास में रहना चाहिए कि हम भी इन ल.ना. जैसे बनें। इसमें मूंझने की तो दरकार ही नहीं। पुरुषार्थ करना चाहिए। दिलशिकस्त नहीं होना चाहिए। यह पढ़ाई तो ऐसी है कि छत पर बैठकर भी पढ़ सकते हैं। विलायत में रहे तो भी पढ़ सकते हैं। घर में रहकर भी पढ़ सकते हैं। इतनी सहज तो यह पढ़ाई है। मेहनत कर अपने पापों को काटना है और दूसरों को भी समझाना है। दूसरे धर्म वालों को भी तुम समझा सकते हो। कोई को भी यही बताना है कि तुम आत्मा हो। आत्मा का स्वधर्म एक ही है। इनमें कोई फर्क नहीं मिल सकता है। शरीर से ही अनेक धर्म होते हैं। आत्मा तो एक ही है। सभी एक ही बाप के बच्चे हैं। आत्माओं को बाबा ने एडाप्ट किया है। इसलिए ही ब्रह्मा मुखवंशावली गाये जाते हैं। कोई को भी समझाओ कि तुम्हारी आत्मा का बाप कौन है?फार्म में भी तुम भरवाते हो उसमें भी बहुत अर्थ है। बाप तो जरूर है ना जिनको तो याद भी करते हो। आत्मा अपने बाप को याद करती है। आजकल तो भारत में कोई को भी फादर कह देते हैं। मेयर को भी फादर कहेंगे। मनुष्य जो कुछ भी कहते हैं बिगर समझ के। अब तुम बच्चों को यह सब बातें समझाई जाती हैं। तुम तो फिर कोई को भी समझा सकते हो। फादर के पास क्या वर्सा देखो कुछ पता है?बच्चों को यह पता .....

है तो जनावर से भी बदतर ईडियट ठहरा ना। जनावर को भी पता होता है कि यह हमारा दर है। गाय भी कहीं भी जावेगी तो भी बुद्धि में रहेगा ही रहेगा कि हमारे बच्चे वहां हैं। जरूर2 वापस बच्चों के पास आ जावेगी। कैसे भी करके आकर बच्चों से मिलेगी। याद की रग जाती है। मां को बच्चे भी याद करते हैं। अरे, मारते हैं। दूध पीने समय शोर मचाते हैं। जनावर में भी इतनी अक्ल है ;परंतु मनुष्य में तो वो भी नहीं है। हम आत्मा का बाप कौन सा है?गाते भी हैं कि तुम मातपिता.....परंतु वो कौन है,कैसे हैं वो कुछ भी पता नहीं है। भारत में ही तुम मातपिता.....कह कर बुलाते हैं। बाप यहां ही आकर मुखवंशावली रचना रचते हैं। भारत को मदर कंट्री कहते हैं। पुकारते भी हैं कि मातपिता.....तो वहां जरूर गॉडपिता कह बुलाते हैं ;परंतु माता भी तो चाहिए ना जिससे बच्चों को एडॉप्ट करे। पुरुष भी स्त्री को एडॉप्ट करते हैं फिर उनसे बच्चे पैदा करते हैं। रचना रची जाती है। यहां भी इनमें परमपिता परमात्मा प्रवेश कर पढ़ाते हैं। एडॉप्ट करते हैं। बच्चे पैदा होते हैं। वो है आत्माओं का बाप। फिर यहां आकर उत्पत्ति करते हैं। यहां तुम बच्चे बनते हो तब फादर और मदर कहा जाता है। वो तो है स्वीटहोम। वहां पर तो सभी आत्मायें ही रहती हैं। वहां पर भी बाप बिना कोई जा नहीं सकते। कोई भी मिले तो बोलो कि तुम स्वीटहोम में जाना चाहते हो?फिर पावन जरूर बनना पड़े। अभी तो तुम (भ्रष्टाचारी) हो। अभी तो है ही पतित आयरन एज्ड दुनियां। अभी तुमको तो जाना है वापस अपने घर। आयरन एज्ड आत्मायें तो अपने घर जा नहीं सकती है। आत्मायें स्वीटहोम में पवित्र ही रहती हैं। तो अब बाप समझाते हैं कि बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। बाप को जितना याद करेंगे उतना ही पावन बनेंगे और फिर ऊँच पद पावेंगे नम्बरवार। ल.ना. के चित्र पर तो कोई को भी समझाना बहुत सहज है। भारत में इनका (राज्य) था। बाबा ने कहा था कि ल.ना. के चित्र में डेट जरूर डालनी चाहिए। अब दूसरा चित्र जो बनाते हैं उसमें जरूर जरूर डाली होगी। यह जब राज्य करते थे तो विश्व में शांति थी। विश्व भर में तो शांति बाप ही कर सकते हैं। और कोई की ताकत नहीं। अभी बाप हमको राजयोग सिखा रहे हैं नई दुनियां के लिए। राजाओं का राजा कैसे बना सकते हैं वो आकर समझाते हैं। बाप ही नालेजफुल है ;परंतु उससे कौन सी नालेज है यह कोई भी नहीं जानते हैं। सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की हिस्ट्री,जॉग्राफी बाप ही जानते हैं। वो ही सुनाते हैं। मनुष्य तो या कहेंगे कि सर्वव्यापी है या कहेंगे कि सर्व के अंदरों की जानने वाला है। फिर अपने को तो कह ना सके। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। अच्छी रीति धारणा कर और हर्षित होना है। इन ल.ना. का चित्र सदैव हर्षितमुख वाला ही बनाते हैं। स्कूल में ऊँच दर्जा पढ़ने वाले कितने हर्षित होंगे। दूसरे भी कहेंगे कि यह तो बहुत बड़ी परीक्षा पास करते हैं। यह तो बहुत बड़ी परीक्षा है। फीस आदि की कोई बात नहीं। सिर्फ हिम्मत की बात है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। जिसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। बाप कहते हैं कि पवित्र बनो। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर काला मुंह कर लेते हैं। बहुत जबरदस्त माया है। फेल हो जाते हैं जो तो फिर उनका नाम नहीं गाया जाता। फलाने2 से बहुत अच्छे2 चल रहे है। बहुत महिमा गाते है। बाप कहते हैं अपने लिए आप ही पुरुषार्थ करके राजधानी प्राप्त करनी है। पढ़ाई से ऊँच पद पाना है। यह है ही राजयोग। प्रजायोग नहीं है ;परंतु प्रजा भी तो बनेगी ना। शक्ल और सर्विस ही से पता पड़ जाता है कि यह क्या बनने लायक है। स्कूल में स्टुडेंट्स की चाल–चलन से समझ जाते हैं कि यह फर्स्ट में और यह थर्ड नम्बर में आने वाला है। यहां भी ऐसे ही है। जब पिछाड़ी में परीक्षा पास होगी तो तुमको सब सा. हो जावेगा। सा. होने में कोई देरी नहीं लगती है। फिर तो लज्जा आवेगी कि ओफ, नापास हो गये। नापास होने वाले को प्यार कौन करेगा? नम्बरवन गंदा बनाने वाला है बाइस्कोप। उसमें जाने वाले बहुत करके फेल होकर गिर पड़ते हैं। कोई2

फीमेल्स भी ऐसी होती हैं जिनको कि पिक्चर देखे बिना रोजाना की नींद नहीं आती है। पिक्चर देखने से ही अपवित्र होने का पुरुषार्थ जरूर करेंगे। यहां जो कुछ भी हो रहा है जिसमें ही मनुष्य खुश रहते हैं। वो सब है दुःख के लिए। यह है विनाशी खुशियां। अविनाशी खुशी अविनाशी बाप से ही मिलती है। तुम समझते हो कि बाबा हमको इन जैसा (ल.ना.) बनाते हैं। वैसे तो 21जन्मों के लिए लिखते थे। अब बाबा लिखते हैं 50/60 जन्म ;क्योंकि द्वापर में भी पहले तो तुम बहुत सुखी ,धनवान रहते हो ना। भल पतित बनते हो तो भी धन बहुत रहता है। यह तो जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बनते हैं तब दुःख शुरू होता है। पहले तो सुखी रहते हैं। जब बहुत दुःखी होते हो तब बाप आते हैं। महान अजामिल जैसे पापियों का भी बाप उद्धार करते हैं। बाप कहते हैं कि मैं सबको ले जाऊँगा मुक्तिधाम। फिर सतयुग की राजाई भी तुमको देता हूँ। सबका कल्याण तो होता है ना। सबको अपने2 ठिकाने पहुँचा देता हूँ। सतयुग में सबको सुख रहता है। शांतिधाम में भी सुख रहता है। कहते हैं कि विश्व में शांति हो। बोलो इन ल.ना. का जब राज्य था तो विश्व में शांति थी ना। इसको हैवेन कहा जाता है ना। दुःख की बात हो नहीं सकती है। वहां तो ना दुःख ना अशांति। यहां पर तो घर2 में अशांति है। देश2 में अशांति है। कितने टुकड़े2 हो पड़े हैं। कितने फ्रैक्शन हैं। 100माइल्स पर भाषा अलग। अब कहते हैं कि भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत है। अब आदि सनातन देवी देवता धर्म का ही किसको पता नहीं है। तो फिर यह कैसे भला कहते हैं कि यह प्राचीन भाषा है। तुम बता सकते हो कि आदि सनातन देवी देवता कब था। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई तो बहुत डल हैडिड भी होते हैं। देखने में भी आता है कि यह तो कैसे पत्थरबुद्धि है। अज्ञानकाल में भी कहते हैं ना हे भगवान इनकी बुद्धि का ताला खोलो। अब बाप तुम बच्चों की बुद्धि को खोल रहे हैं अर्थात् तुमको रोशनी मिली है। फिर भी कोई2 की बुद्धि खुलती नहीं है। कहते हैं बाबा आप तो हमारे (बुद्धिवानों की) बुद्धि हो। हमारे पति की भी बुद्धि का ताला खोलो। बाप कहते हैं कि क्या मैं इसीलिये आया हूँ कि एक2 की बुद्धि का ताला खोलता जाऊँ?फिर तो सभी महाराजा–महारानी हो जावेंगे। हम(भला)कैसे सबका ताला खोलेंगे?उनको सतयुग में आना ही नहीं होगा तो वो कैसे आवेंगे?तो फिर ताला भी कैसे खोलेंगे?ड्रामाअनुसार आप ही उनकी बुद्धि खुलेगी। मैं कैसे खोलूंगा?ड्रामा पर भी तो है ना। सब फेल पास होते ही हैं। स्कूल में भी नम्बरवार होते हैं। यह भी पढ़ाई है। प्रजा भी बननी है। सबका ताला खुल जावे तो प्रजा कहां से आवेगी?यह तो कायदा नहीं है। तुम बच्चों को ही पुरुषार्थ करना है। हर एक के पुरुषार्थ से जाना जाता है। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं उनको जहां–तहां बुलाते हैं। सेमिनार में भी कहते हैं फलाने2 को भेजो। फिर बाबा राय देते हैं कि फलाने2 को मंगवाओ। जो भला डल बुद्धि हैं वो क्या राय देंगे। 100नामों में बाबा 10/20नाम तो कट कर ही देते हैं। बाबा जानते हैं कि कौन2 अच्छी सर्विस कर रहे हैं। बच्चों को अच्छी रीति पढ़ना है। अच्छी रीति पढ़ोगे तो फिर घर ले जाऊँगा और फिर स्वर्ग में भेज दूंगा। नहीं तो सजायें बहुत कड़ी हैं। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। स्टुडेंट को टीचर का शो निकालना चाहिए। सतगुरू एक ही है। बाकी कोई गुरू है नहीं। बाकी सभी हैं झूठे गुरू। सतयुग में कोई गुरू होता नहीं है। अब कलियुग में है ही सब तमोप्रधान। तो कोई भी गुरू हो कैसे सकते हैं?अंधधुंध सरकार है ना। अपने को जगतगुरू कहलाना,कितना इन्सल्ट है। जगतगुरू तो जगत में प्राइममिनिस्टर,प्रेजिडेंट आदि सब आ जाते हैं। सबका गुरू हो गया। कितनी झूठी बातें हैं। कोई धणी–धोनी तो है नहीं। बाप ही सबका धणी है। वो कहते हैं इन साधुओं आदि का भी मैं ही उद्धार करता हूँ। फिर यह भला गुरू कैसे बन सकते हैं। पतित को गुरू थोड़े ही कहा जाता है। गुरू तो एक ही होता है। सर्व का सदगति दाता एक। यह तो है ही रावण राज्य। सबकी पत्थर बुद्धि है। गोल्डन एज में पारस बुद्धि थे। अभी है आयरन एज तो यहां गोल्डन बुद्धि वाले हो (कैसे) सकते हैं। ओम।